शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -5 March 2024

भारत के पहले आर्थिक सुधारक दादा भाई नौरोजी के आर्थिक विचारों का अध्ययन

विवेक कुमार पांडेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)
राजीव गांधी डी. ए. वी. महाविद्यालय, बांदा (उ.प्र.)

सारांश

दादा भाई नौरोजी ने बंगाल में अंग्रेज अफसरों द्वारा किये जा रहे चरम भ्रष्टाचार का ड्रेन थ्योरी के रूप में खुलासा किया था। इस सिद्धांत द्वारा उन्होंने अंग्रेजों सहित पूरी दुनिया को यह बताया था कि भारत से कैसे सोना और पैसा लूटकर इंग्लैंड ले जाया जा रहा है। इस सिद्धांत ने जहां बहुत सारे भारतवासियों के सामने अंग्रेजों के धोखे की तस्वीर प्रस्तुत की वहीं देश में प्रेम की भावना भी विकसित की। दादा भाई नौरोजी अपने ड्रेन आप वेल्थ के सिद्धांत के लिए खास तौर पर जाने जाते हैं। उन्होंने इस सिद्धांत की जानकारी अपनी लोकप्रिय किताब पॉवर्टी एंड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया में विस्तृत रूप से दी है। उन्होंने देश में औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत के शुद्ध राष्ट्रीय लाभ का आकलन करने का फैसला किया था। अपने अर्थशास्त्रीय कार्य के जरिए उन्होंने तार्किक तौर पर साबित कर दिया कि ब्रिटेन भारत से पैसा निकाल कर ले जा रहा है। दादा भाई नौरोजी ने इस सिद्धांत में बताया कि ब्रिटिश नीतियों के कारण भारतीय आर्थिक राजस्व का चौथाई हिस्सा ब्रिटेन में जा रहा है,और इसके जरिए भारत को आर्थिक सूखे की ओर धकेला जा रहा है। उन्होंने बताया कि इससे ब्रिटिश सरकार को कितना लाभ हो रहा है। उनके शोध पत्र के मुताबिक साल 1814 से लेकर 1845 तक 35 करोड़ पाउंड स्टर्लिंग भारत से इंग्लैंड चला गया था।

कुंजीभूत शब्द

ड्रेन थ्योरी, पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया, औपनिवेशिक भारत, स्टर्लिंग, बहिर्गमन, आर्थिक संकट।

मनुष्य की विचार शक्ति के साथ ही आर्थिक विचारों का भी जन्म हुआ। प्रोफेसर अलेक्जेंडर ग्रे के अनुसार मानव विचार के इतिहास में अर्थशास्त्र के सिद्धांत के विधिवत

नियमों का विकास भले ही हाल में हुआ हो परंतु अर्थशास्त्र संबंधी बातों के बारे में मनन और किसी हद तक विचार विमर्श सनातन काल से चला आ रहा है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य प्रारंभ से ही आर्थिक प्रयत्न करता रहा है। जैसे-जैसे आर्थिक प्रगति हुई, आवश्यकताओं का भी विस्तार हुआ। वैसे-वैसे मनुष्य के आर्थिक प्रयत्नों का स्वरूप भी बदलते हुए परिवेश में बढ़ने लगा। आर्थिक प्रगति के विभिन्न चरणों में विभिन्न आर्थिक विचारकों द्वारा जो आर्थिक विचार व्यक्त किए गए हैं। वे आर्थिक विचार बहुत ही प्राचीन हैं, जो मानव के प्रारंभिक आर्थिक प्रयत्नों से जुड़े हुए हैं। भारत में आर्थिक विचारों का विकास पिछले सौ वर्षों से कुछ अधिक काल में ही हुआ है। अंग्रेजों के शोषण ने भारतीय विचारकों को एक नई दिशा प्रदान की और उन्होंने अंग्रेजों के आर्थिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई। 19वीं सदी के प्रारंभ में भारतीय परिस्थितियों में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिन्होंने आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक नीतियों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। अंग्रेज जिन मुक्त हाथों से भारत का माल लूट कर इंग्लैंड का खजाना भर रहे थे और भारतीयों को हेय दृष्टि से देखते थे, उसने प्रतिक्रिया की एक नई लहर को जन्म दिया। इसके साथ ही पाश्चात्य देशों में राष्ट्रवाद की जो लहर प्रवाहित हो रही थी उसने भी भारतीय आर्थिक विचारों को प्रभावित किया। इस समय जो भी आर्थिक विचार व्यक्त किए गए वह भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के राजनीतिक विचारों से प्रभावित थे। उस काल के प्रमुख विचारकों में दादाभाई नौरोजी का नाम उल्लेखनीय है। उस युग में इन्होंने जो आर्थिक विचार प्रस्तुत किए उनके महत्व को देखते हुए इन्हें आधुनिक भारतीय आर्थिक विचारों का संस्थापक कहा जा सकता है।

दादा भाई नौरोजी का जन्म सन 1825 में मुंबई के एक निर्धन परिवार में हुआ था। बचपन से ही उन्होंने अपनी तीव्र बुद्धि का परिचय दिया। उनकी उच्च शिक्षा मुंबई के एलफिंस्टन कॉलेज में संपन्न हुई थी। सन 1855 में वह कामा एंड कंपनी के प्रतिनिधि के रूप में इंग्लैंड गए थे। सन 1856 में वे लंदन के कॉलेज में अध्यापक हो गए और लगभग 10 वर्ष तक रहे। उन्होंने वहां लंदन इंडियन सोसाइटी स्थापित की जिसका उद्देश्य भारतीय छात्रों को संगठित करना और भारत की समस्याओं का अध्ययन करना था। उन्होंने यूरोप के देशों की अर्थव्यवस्था का भी सूक्ष्म अध्ययन किया था। नौरोजी ने देश की सेवा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस संस्था के माध्यम से की और इस संस्था के वे सन 1886, 1893 एवं 1906 में अध्यक्ष भी चुने गए। महत्वपूर्ण विचारों के कारण नौरोजी को भारत में ही नहीं बल्कि इंग्लैंड में भी सम्मान मिला। यद्यपि उन्होंने कई महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। लेकिन उनका सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ पॉवर्टी एंड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया है। यह नौरोजी की महत्ता एवं प्रतिष्ठा को प्रकट करता है कि उन्हें सन 1892 में ब्रिटिश संसद का सदस्य निर्वाचित किया गया और

प्रथम भारतीय के रूप में एलफिंस्टन कॉलेज के प्राध्यापक के पद पर नियुक्त भी किया गया। सन 1917 में इनकी मृत्यु हो गयी।[1]

दादा भाई नौरोजी के आर्थिक विचार

भारतीय आर्थिक विचारधारा के इतिहास में दादा भाई नौरोजी भारत की राष्ट्रीय आय के मूल्यांकन में अपने महत्वपूर्ण कार्य के लिए काफी विख्यात थे। अपने समय के उत्कृष्ट अर्थशास्त्रियों में से एक होने के कारण उन्होंने उन बातों का पता लगाया और विश्लेषण किया जो आवश्यकताओं, साधनों के अभाव और बेरोजगारी से परेशान तथा भारी कराधान के बोझ से कराह रहे भारतीयों की दयनीय आर्थिक स्थिति के लिए जिम्मेदार थी। दादा भाई नौरोजी ने अपने आर्थिक विचार अपनी पुस्तक Poverty and un-British Rule in india में व्यक्त किए थे।[2] जो इस प्रकार है -

भारत में निर्धनता की समस्या

दादा भाई नौरोजी ने भारत की गरीबी की समस्या पर अपना ध्यान केंद्रित किया था। उन्होंने भारत की गरीबी के लिए ब्रिटिश शासन को उत्तरदायी ठहराया था। दादा भाई नौरोजी ने विभिन्न आंकड़ों द्वारा यह प्रमाणित किया कि उन दिनों भारत में निर्धनता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी और इस तत्व को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने विभिन्न प्रमाण भी दिए। दादा भाई नौरोजी ने कहा कि भारतीय औसत आय ₹20 प्रतिवर्ष से भी काम है जबकि प्रति व्यक्ति जीवन का व्यय देश में ₹34 है। उन्होंने बताया कि देश के अधिकांश नगरों में मनुष्य भुखमरी के शिकार हो रहे हैं। हजारों की संख्या में लोगों को कोई भी काम नहीं है तथा वह इधर-उधर भटकते हैं। कृषि में लगे हुए लोगों को पेट भर भोजन मिलना भी मुश्किल है। बहुत से लोग कृषि कार्य छोड़ चुके हैं। दादा भाई नौरोजी ने बताया कि यह भारत की निर्धनता का ही परिणाम है कि देश की आय बहुत कम है। आयात निर्यात का स्तर इतना गिरा हुआ है कि लोगों का जीवन स्तर निम्न है। मृत्यु दर अधिक है, और विभिन्न क्षेत्रों को अकाल का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने आवश्यक आंकड़े एकत्रित कर यह निष्कर्ष निकला कि ऐसे भोजन और कपड़े के लिए भी जो कैदीयों को दिये जाते हैं, अच्छे मौसम में पर्याप्त उत्पादन नहीं हो पता, फिर अल्प मात्रा में विलासिता, धार्मिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं एवं संकट के लिए व्यवस्था करने का तो प्रश्न ही नहीं होता।

भारतीय जनता की ऐसी स्थिति है। दादा भाई नौरोजी ने भारत की भीषण गरीबी को दूर करने के लिए निम्न सुझाव दिए थे –

1. भारत और इंग्लैंड दोनों देशों में काम करने वाले कर्मचारियों का वेतन संबंधित देश से ही दिया जाना चाहिए। भारत में कार्य करने वाले अंग्रेज तथा इंग्लैंड में कार्य करने वाले भारतीयों के भुगतान के संबंध में एक उचित अनुपात निश्चित किया जाना चाहिए।
2. अंग्रेजों का वेतन अधिक ऊंचा होने के कारण उन्हें पेंशन से वंचित रखा जाना चाहिए।
3. भारतीय नौसेना पर जो भी व्यय किया जाता है, उसका भार भारत पर नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि जलमार्ग से कोई अन्य देश भारत पर आक्रमण नहीं कर सकता।[3]

भारत की राष्ट्रीय आय

नौरोजी प्रथम भारतीय थे। जिन्होंने भारत की राष्ट्रीय आय तथा उसमें विभिन्न वर्गों के अंश का अनुमान लगाया। उन दिनों भारत की राष्ट्रीय आय संबंधी आंकड़े इंडियन इकोनॉमिस्ट में प्रकाशित होते थे, जो अपूर्ण तथा अविश्वसनीय थे। आंकड़ों के आधार पर उन्होंने यह अनुमान लगाया कि सन 1867-70 के वर्षों में मुंबई प्रेसिडेंसी में प्रति व्यक्ति आय 20 रुपए थी।[4] उनके अनुसार न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रति भारतीय व्यक्ति की आय ₹34 होनी चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आय का एक बड़ा अंश धनी एवं मध्यवर्ग के पास पहुंच जाता है, तथा निर्धन वर्ग, को जिसका प्रतिशत अधिक है, अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी आय प्राप्त नहीं होती। नौरोजी का विश्वास था कि किसी भी देश का आर्थिक विकास उत्पत्ति के साधनों पर निर्भर रहता है और इन साधनों को राष्ट्रीय आय के द्वारा बढ़ाया जा सकता है तथा राष्ट्रीय आय बढ़ाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय आय की गणना करते समय तीन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. भारत की कुल वास्तविक भौतिक वार्षिक आय कितनी है?
2. सभी वर्ग के लोगों की न्यूनतम आवश्यकताएं है और साधारण आवश्यकताएं क्या हैं?
3. भारत की आय इन आवश्यकताओं के बराबर है, उससे कम अथवा अधिक।

बहिर्गमन अथवा निष्कासन का सिद्धांत

यह नौरोजी का प्रमुख सिद्धांत है। इस सिद्धांत के द्वारा उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारत की गरीबी एवं आर्थिक अवनति का प्रमुख कारण भारतीय संपत्ति का विदेश में जाना है अर्थात भारत में जो भी उत्पादन किया जाता है, इसका अधिकांश भाग स्थाई रूप से इंग्लैंड को चला जाता है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकला की अंग्रेजी राज भारत के लिए एक असह्य आर्थिक बोझ सिद्ध हुआ है। उन्होंने बताया कि यदि किसी देश से एकत्रित आय को उसी देश में व्यय कर दिया जाता है तो आर्थिक क्रिया सुचारू रूप से चलती रहती है। लेकिन यदि उस आय को किसी अन्य देश में भेज दिया जाए तो वह आय में से एक स्थाई बहिर्गमन हो जाता है। जिसका देश के आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसे उन्होंने भारत पर लागू करते हुए सिद्ध किया कि बढ़ते हुए प्रशासनिक व्यय को पूरा करने के लिए अंग्रेजों ने जो भारी कर भारतवासियों पर लगाये उससे प्राप्त धन भारत में व्यय नहीं किया गया, बल्कि उसे इंग्लैंड भेज दिया गया। भारतीय धन को जिस स्रोत से बाहर भेजा जाता था। उसे स्पष्ट करते हुए नौरोजी कहते हैं कि यूरोपीय अधिकारियों की भारत में की गई बचत को देश से बाहर भेजा जाता था। इंग्लैंड में रहने वाले अफसर के वेतन तथा पेंशन का भारतीय खजाने से भुगतान किया जाता था, और काफी मात्रा में धन का भारत से हस्तांतरण किया जाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में पूंजी निर्माण की प्रक्रिया प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई, और यहां गरीबी घर करती चली गई। भारत से बाहर पूंजी के गमन का अनुमान लगाते हुए नौरोजी कहते हैं कि सन 1900 ई. तक भारत की आय में से 200 करोड़ पौंड की आय भारत से बाहर चली गयी थी।[5]

नौरोजी के अनुसार धन का प्रवाह देश से बाहर होने से भारत को दो हानियां हुई। पहले तो यहां की पूंजी में निरंतर कमी होती गई और दूसरी यहां के उद्योगों का विकास रुक गया। वास्तव में नौरोजी विदेशी पूंजी के विरोधी नहीं थे। उन्होंने तो केवल इंग्लैंड की पूंजी का इसलिए विरोध किया क्योंकि यह भारत से ही एकत्रित की गई पूंजी थी। जिसके माध्यम से भारत का शोषण हो रहा था और फिर पूंजी और व्यापार के माध्यम से उन्होंने भारत पर आक्रमण भी किया।[6]

धन निष्कासन के दुष्परिणाम

नौरोजी ने अपने सिद्धांत में धन निष्कासन के निम्न दुष्परिणाम बतलाएं –

1. **अर्थव्यवस्था पर प्रभाव -** धन के निष्कासन के परिणाम स्वरुप भारत में पूंजी संचय नहीं हो पा रहा था। पूंजी का संचय नहीं हो पाने के कारण कोई औद्योगिक विकास नहीं हो पाया। लोगों का जीवन स्तर लगातार गिरता चला गया और गरीबी बढ़ती गई। धन के निष्कासन के चलते जनता पर कारों का बोझ बहुत अधिक बढ़ गया था।
2. **राजनीतिक प्रभाव -** राष्ट्रवादी विचारकों ने धन के निष्कासन के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए साम्राज्यवाद एवं राष्ट्रवाद के बीच अंतर्विरोध को पहचान लिया और इस तरह आर्थिक राष्ट्रवाद की अवधारणा का जन्म हुआ। जिसके द्वारा ब्रिटिश सरकार के सारे दावों को खारिज करने में मदद मिली। जैसे उपयोगितावाद, आधुनिकीकरण के प्रतीक, स्वराज्य, शिक्षा आदि। यही आर्थिक राष्ट्रवाद की चेतना 1906 में स्वदेशी आंदोलन में उभर कर सामने आई। जब विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं का प्रसार का नारा लगाया गया।[7]
3. **समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव -** धन के निष्कासन से रेशम उद्योग, व्यापार, कृषि आदि में निवेश नहीं हुआ। परिणामस्वरुप लोगों की प्रति व्यक्ति आय घटने लगी। अकाल की निरंतरता ने लोगों के जीवन को और भयावह बना दिया। इस प्रकार यूरोप के अन्य राज्यों के सापेक्ष भारत के लोगों का जीवन स्तर एवं जीवन प्रत्याशा दोनों घटने लगी, और यही शोषित लोग कालांतर में भारतीय राष्ट्रवाद के सामाजिक आधार बनकर उभरे।[8]
4. **धन निष्कासन की मात्रा -** ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी तथा ब्रिटिश क्राउन द्वारा भारत से निष्कासित धन की मात्रा का सही-सही अनुमान लगाना बहुत कठिन है। अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग आंकड़े दिए हैं -

   * बंगाल प्रांत में प्राप्त होने वाले राजस्व एवं व्यय के विवरण के अनुसार कंपनी ने प्रथम 6 वर्षों (1765 से 1771) के बीच 1,30,66,999 पौंड शुद्ध राजस्व अर्जित किया। जिसमें से 90,27,609 पौंड खर्च कर दिया। शेष बचे 40,39,152 पौंड का सामान इंग्लैंड भेज दिया।

* विलियम डिग्बी के अनुसार 1757 से 1815 तक भारत से 50 से 100 करोड़ पौंड की राशि इंग्लैंड भेजी गयी।

* 1828 में मार्टिन मोंटगुमरी ने अनुमान लगाया था कि प्रतिवर्ष 3 करोड़ पौंड भारत से बाहर जाता था।

* जार्ज विन्सेन्ट द्वारा 1851 में लगाया गये अनुमान के अनुसार 1834 से 1851 ई. तक लगभग 42 लाख पौंड प्रतिवर्ष भारत से बाहर गया।[9]

नौरोजी ने अपने लेखों एवं भाषणों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की कटु आलोचना की थी। उन्होंने बताया कि भारत का शासन विदेशी व्यक्ति द्वारा चलाए जा रहा था। जिसमें स्वयं भारतीयों को कोई प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया था। कुछ अंग्रेज लेखकों ने स्वयं इस सत्य को स्वीकार करते हुए कहा कि भारतीयों को प्रशासन में उचित भाग दिया जाना चाहिए था। उन्होंने बताया कि भारत में जो आर्थिक संकट एवं आपत्तियां आई हैं उनकी जिम्मेदारी ब्रिटिश शासन पर ही है। उन्होंने अंग्रेजों के इस दावे को निराधार बताया कि ब्रिटिश शासन काल में भारत ने प्रगति की है। उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि भारत का संकट प्राकृतिक विपत्तियों का परिणाम नहीं वरन अंग्रेजों की भारत विरोधी नीतियों का परिणाम है। जिसके अनुसार भारत को सदैव गुलाम बनाकर रखा जा सके। उन्होंने यह निष्कर्ष निकला कि यदि ब्रिटिश काल में भारत ने कोई प्रगति नहीं की तो अंग्रेजों को भारत में रहने का कोई औचित्य नहीं है।[10]

संदर्भ

1. डॉ. सिन्हा वी.सी, आर्थिक विचारों का इतिहास, पृष्ठ संख्या 17, एस. बी. पी. डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
2. दादा भाई नौरोजी, लोक सभा सचिवालय, नई दिल्ली 2019।
3. प्रो. ओझा बी. एल. आर्थिक विचारों का इतिहास, पृष्ठ संख्या 10, एस. बी. पी. डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
4. डॉ. सिन्हा वी.सी, आर्थिक विचारों का इतिहास, पृष्ठ संख्या 18, एस. बी. पी. डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।

5. प्रो. लाल एस.एन., भारतीय अर्थव्यवस्था, सर्वेक्षण तथा विश्लेषण, शिवम् पब्लिशर्स, इलाहाबाद।
6. शर्मा रामशरण, प्रारंभिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
7. प्रो. ओझा बी. एल. भारतीय आर्थिक समस्याएं,एस. बी. पी. डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
8. डॉ. मिश्रा जे. पी. आर्थिक संवृद्धि एवं विकास, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
9. शुक्ल राम-लखन, आधुनिक भारत का इतिहास, पृष्ठ संख्या 119, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
10. भारतीय अर्थव्यवस्था: एक समग्र अध्ययन, बौद्धिक प्रकाशन, इलाहाबाद।